M. A. (Previous) Examination, 2001

PHILOSOPHY

Paper-I

Problems of Indian Philosophy

Time: 3Hours] [Maximum Marks: 100

1. सत्कार्यवाद व असत्कार्यवाद के स्वरूप की आलोचनात्मक विवेचना कीजिए।

2. क्षणिकवाद के प्रकाश में बौद्धों के प्रतीत्यसमुत्पाद की व्याख्या कीजिए।

3. वैशेषिक दर्शन के पदार्थ-विचार की सविस्तार विवेचना कीजिए।

4. 'आत्मा के स्वरूप' के संदर्थ में बौद्ध, जैन एवं शंकर-वेदांत मत की तुलनात्मक विवेचना कीजिए।

5. न्याय एवं मीमांसा के 'प्रमाण्यवाद' की तुलानात्मक व आलोचनात्मक विवेचना कीजिए।

6. न्याय एवं जैन ज्ञानमीमांसा की प्रमाण-मीमांसा को समझाइये।

7. जैन-दर्शन के 'नयवाद एवं स्यादवाद' की आलोचनात्मक विवेचना कीजिए।

8. गीता के 'कर्म-योग व कर्म-संयास' के स्वरूप एवं संबंध की विवेचना कीजिए।

9. भारतीय दर्शन में कर्मवाद एवं स्वतंत्र वाद के स्वरूप एवं संबंध की सविस्तार विवेचना कीजिए।

10. जैन एवं बौद्ध के अनुसार 'मोक्ष के स्वरूप एवं साधन' की तुलनात्मक विवेचना कीजिए।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com